

श्री स्वामिनी
स्तुति यतुष्टय
संस्कृत श्लोक
साथे

श्री विठ्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी चरित्रामृतम्

अथ श्रीराधाप्रार्थनाचतुःश्लोकी

श्रीकृष्णाय नमः।

कृपयति यदि राधा बाधिताशेषबाधा,
किमपरमवशिष्टं पुष्टि-मर्यादयोर्मै॥
यदि वदति च किञ्चित् स्मेरहासोदितश्रीर्द्विजवर-
मणिपङ्क्त्या मुक्तिशुकत्या तदा किम्॥१॥

अधिक कहा चाहिए।

श्यामसुंदर शिखंडशेखर स्मेरहास्यमुरलीमनोहर॥

राधिकारसिक मां कृपानिधे स्वप्रिया-चरणकिंकरी कुरु॥२॥

भावार्थ :- हे श्यामसुंदर! सौंदर्य शिखरपर विद्यमान चंद्रमा है, श्रीमुरली मनोहर आप स्वयं श्री राधा के रसिक है अतः मुझे अपनी प्रिया की चरणदासी करो।

प्राणनाथ वृषभानुनंदिनीश्रीमुखाब्जरसलोलषट्पद॥

राधिका पदतले कृतस्थितिस्त्वां भजामि रसिकेंद्र-शेखर॥३॥

भावार्थ :- हे प्राणनाथ! आप श्रीवृषभाननंदिनी के श्रीमुख के भ्रमर है। मैं श्रीराधा के पदतल में स्थित हो आपको रसिकन् के चंद्रमा सेवन करना चाहूँ हुँ।

सविधाय दशने तृणं विभो प्रार्थये ब्रजमहेंद्रनंदन॥

अस्तु मोहन तवातिवल्लभा जन्मजन्मनि मदीश्वरी प्रिया॥४॥

भावार्थ :- अत्यंत तापयुक्त, दैन्यपूर्ण होय मैं (श्रीगुसाँईजी) ब्रजमहेंद्र श्रीनंदरायजी के नंदन आपतें प्रार्थना करु हूँ आपकी श्रीवल्लभा श्रीराधा जन्म-जन्म मेरी (श्रीगुसाँईजी) की ईश्वरी प्रिय हो।

इति श्रीविट्ठलेश्वरविरचिता राधाप्रार्थनाचतुः श्लोकी संपूर्णा।

अथ श्रीस्वामिनीप्रार्थना (विनंति)

इति श्रीविठ्ठलेश्वरविरचिता राधाप्रार्थनाचतुः श्लोकी संपूर्णा।

अथ श्रीस्वामिनीप्रार्थना (विनंति)

श्रीकृष्णाय नमः।

(शास्त्रविहित द्विजाति के नित्य षट्कर्म के सदृश भक्ति मार्गीय के स्वामिन्याधिनत् भावनातें श्रीगुसाँईजी द्वारा पुष्टि भक्तिमार्गीय षट्कर्म को निरूपण)

श्रीराधे प्रियतमदृक्संगमसंजातहासदृक्सलिलैः।
भवदीयैः स्नानं मे भूयात्सततं न पाथोभिः॥१॥

भावार्थ :- हे श्री राधा! आपके संबंध वारे आपके प्रियतम श्रीकृष्ण के समागम तें उत्पन्न हास्य तें नेत्रन् ते उमड़ते भए प्रेमाश्रु के जलतें मेरो स्नान होऊ। भवत्स के जलतें मेरी

भावार्थ :- हे श्री राधा! आपके संबंध वारे अ
श्रीकृष्ण के समागम तें उत्पन्न हास्य तें नेत्रन् ते उमड़ते
जलतें मेरो स्नान होऊ। भूतल के जलतेंनाहिं।

भूयान्मेऽभ्यवहारस्तावकतांबूलचर्वितेनैव।
पानं करुणाकृतस्मितावलोकामृतेनैव॥२॥

भावार्थ :- मेरो महाप्रसादात्मक भोजन आपुको चर्वित
भावयुक्त स्मितावलोकन् रूप पान होऊ।

त्रिषवणमिह भवदंघ्रिप्रणतिः संध्या प्रकृष्टदन्येन।
जातस्तुतापक्लेशैर्विंगाढभावेन कीर्तनं नाम्नाम्॥३॥

मेरी त्रिकाल (प्रातः-मध्याह्न-सायं) संध्या होऊ।
 अस्तंगच्छत्सूर्याशुशुक्षणौ दिवसदुःखहोमोऽस्तु।
 त्वत्पृष्ठप्रियवार्ताकथनं मे ब्रह्मयज्ञोऽस्तु॥४॥

भावार्थ :- अस्त होत सूर्य मे दिवस के विरह दुःख को होम
 आपके पूछे भए प्रियसंबंधी कर्ता कथा रूप मेरो ब्रह्मयज्ञ होऊ।
 भवतीनां प्रियसंगमसंजातमनोमहोत्सवेणक्षतः।
 तर्पणमिह सर्वेन्द्रियतृप्तिर्भवतान्मनोरथाप्त्या मे॥५॥

भावार्थ :- आपुके प्रियसंगम तें होवे वारो मनोमहोत्सव के
 तें मेरी सर्वेन्द्रिय रूप तृप्ति मे तर्पण करों।

इत्थं जीवनमस्तु क्षणमपि भवंदग्निविप्रयोगे तु।
 मरणं भवतादेवं भावे शरणं त्वमेव भव॥६॥

अथ श्रीस्वामिन्यष्टकम्

श्रीकृष्णाय नमः।

रहस्य श्रीराधेत्यखिलनिगमानामिव धनं
 निंगूढं मद्वाणी जपतु सततं जातु न परम्।
 प्रदोषे दृड्मोषे पुलिनगमनायाति मधुरं
 चलत्तस्याश्चंचच्चरणयुगमास्तां मनसि मे॥१॥

भावार्थ :- सर्व उपनिषदन् के अत्यंत गूढ़ धन स
 नाम मेरी वाणी नित्य जपो। रात्रि में पुलिन मे

नाम मेरी वाणी नित्य जपो। रात्रि में पुलिन में
अतिकांतियुक्त अतिमधुर श्रीचरण मेरे (श्रीगुसाँईजी
बसें।

अमंदप्रेमार्द्रप्रियकरतलं कुंकुममिषत्
कुचद्वंदे वक्षस्यपि च दधती चारु सततम्।
कृपां कुर्याद्राधा मयि रुचिहेमाद्रिशिखरो-
दितप्रावृण्मेघस्मरहरहरी चूचुकमिषात्॥२॥

भावार्थ :- केसर चर्चित द्वौ वक्षोज पर सतत
प्रभु श्रीकृष्ण के करतल कुँ सतत धारण करिवे वारे
कृपावंत होऊ।

भावार्थ :- केसर चर्चित द्वौ वक्षोज पर सतत उत्क
प्रभु श्रीकृष्ण के करतल कुँ सतत धारण करिवे वारे श्रीराध
कृपावंत होऊ।

निमंत्र्य प्रातर्या निजहृदयनाथं निरुपमा
समाकार्यैकाकिन्यतिघनवनादात्मभवने।
विधायान्नं स्वादु स्वयमतिमुदा भोजयति सा
मयि प्रीता राधा भवतु हरिसंगार्पितमनाः॥३॥

भावार्थ :- स्वस्वामी हृदयेश प्रभु श्रीकृष्ण कुँ प्रातःक
कर अतिगहन बन तें स्वयं के भवन में पधरा स्वादिष्ट अन्न
आदि स्वहस्त ते सिद्ध करी हर्षयुक्त अरोगावें है वह इन

समागम मे समर्पित मना श्रीराधा मुझ पर प्रसन्न होऊ।
 निधाय श्यामांसे निजभुजलतामिंदुवदनं
 कटाक्षैः पश्यंती कुवलयदलाक्षी मधुपतेः।
 मुदा गायंती या मधुर मुरलीजातनिनदा-
 नुसारं तारं सा फलतु मम राधावदनयोः॥४॥

भावार्थ :- श्याम सुंदर श्रीकृष्ण के स्कंधन् प
 पधराय मधुपति श्रीकृष्ण के चंद्रमुख कुँ निहारते नील
 नेत्रयुता व मधुरमुरली ते उत्पन्न निनादानुसार हर्षित उच्च
 श्री राधा मेरे नयन पर फलित होऊ।

नेत्रयुता व मधुरमुरली ते उत्पन्न निनादानुसार हर्षित उ
श्री राधा मेरे नयन पर फलित होऊ।

अमंदप्रेमाद्रात्किसलयमयात्केलिशयना-
दुषस्युत्थायाब्जारुणतरकपोलातिरुचिरा।
गृहं यांती श्रान्तिस्थगितगतिरास्याबुंजगतं
घनीभूतं राधा रसमनुदिनं मे वितरतु॥५॥

भावार्थ :- उत्कृष्ट कोमल नव पल्लवनिर्मित
उषःकाल उठिके अपने घर पधारते कमलते हूँ अ
कामोत्तम नामे शान्तिस्थगित गतियुता श्रीराधा मुखव

उपःकाला उठक अपन घर पधारते कमलते हूँ अधिव
कपोल वारे श्रमैकास्थगित गतियुता श्रीराधा मुखकम
धन रूप रस मोकुँ नित्य देहू।

प्रियेणाक्षणा संसूचितनवनिकुंजेषु विविध
प्रसूनैर्निर्मायातिशयरुचिरं केलिशयनम्।
दिवा प्येषा गुंजन्मधुपमुखरे धीरपवना
श्रितेक्रीडंती मे निजचरणदास्यं वितरतु॥६॥

भावार्थ :- स्वप्रिय प्राणवल्लभ प्रभु श्रीकृष्ण
अच्छी प्रकार ते सूचित नवनिकुंजन मे विविध
शय्या विहार मे दिवसादिक में हूँ रम्यमाण श्रीस्वर्गा

कदंबारूढं या निजपतिमजानंत्यहनि तत्
 तले कुर्वन्ती स्वप्रियतमसखीभिः सह कथाम्।
 अकस्मादुद्धीक्ष्य स्फुटतरलहारोरसमति
 स्मितस्मेरव्रीडाननमुदितदृक् सा मम गतिः॥७॥

भावार्थ :- कदंबवृक्षारूढ स्वप्राणप्रेष्ठ को न जानते
 मे अपनी सखीन् के संग प्रियतम् को गुणानुवाद करते ओ
 जान अति स्मित हास्य ते प्रफुल्लित लज्जायुक्त मुख व हृषि
 राजे है तिन श्रीराधा मे मेरी गति होऊ।

जान अति स्मित हास्य ते प्रफुल्लित लज्जायुक्त मुख व हर्षित
राजे है तिन श्रीराधा मे मेरी गति होऊ।

न मे भूयान्मोक्षो न पुनरमराधीशसदनं
न योगो न ज्ञानं न विषयसुखं दुःखकदनम्।
त्वदुच्छिष्टं भोज्यं तव पदजलं पेयमपि तद्
रजो मूर्ध्नि स्वामिन्यनुसवनमस्तु प्रतिभवम्॥८॥

भावार्थ :- मेरो मोक्ष न होऊ न मोकुँ इंद्रभवन मि
ज्ञान विषयसुख आदि परंतु हे श्री स्वामिनीजी आपके
भोजन होय चरणामृत मेरी पान होय व चरणरज मेरे
जन्मजन्मांतर होऊ।

शानि विनयस्तु आदि परतु ह त्रा स्वामिनां आनन्द
भोजन होय चरणामृत मेरी पान होय व चरणरज मेरे
जन्मजन्मांतर होऊ।

इति श्रीमद्गोपीजनचरणपंकेरुहयुगा-
नुगत्यानंदांभोनिधिनिभृतवाक्कायमनसा।
मयेदं प्रादुर्भावितमतिसुखं विट्ठलपदा-
भिधेयं मय्येव प्रतिफलतु सर्वत्र सततम्॥९॥

भावार्थ :- या प्रकार सर्व शोभायुक्त श्रीगोपिकान् वे
युगल के अनुसरण ते आनंद समुद्र सभर, मन वाणी काय
शब्द वाच्य (श्रीविट्ठलनाथ) मुझ हि मे सतत प्रतिफल

इति श्रीविट्ठलेश्वरविरचितं श्रीस्वामिन्यष्टकं समाप्तम्।

यदैव श्रीराधे रहसि मिलति त्वां यदुपति
 स्तदैवाकार्याहं निजचरणदास्ये निगदिता।
 मुदा चंद्रावल्या शशिमुखि कृतार्थास्मि भवती
 तथा संपन्ने मां स्मरति यदि संप्रेषणविधौ॥१॥
 कदाचित्कालिंद्यामहनि तरलापांगरुचिरा
 समाप्नुप्याकंठं किमपि परिधायाशु वसनम्।
 स्मरेन्मां चेदुत्तारितवसनसंक्षालनविधौ
 कृतार्थोहं भूयान्निजचरणदासीति भवती॥२॥
 तमिस्रायमस्रावितचरणमंजीरनिनदा
 कथंचित्संप्राप्ता प्रियतमनिकुंजं चरणयोः।
 मुदा तल्पारोहे कमलमुखि संमार्जनविधौ
 कृतार्थैवाहं चेत्स्मरति भवति मां सकृदपि॥३॥

विविधबधरातश्रमसाकरा

कुलकपोलमुदीक्ष्य हरिं यदि।

स्मरसि मां व्यजनार्थमपि क्षणं

सुमुखि धन्यतमास्मि तदा ह्यहम्॥४॥

यदि स्नानव्याजात्तरणितनयातीरमहनि

प्रयातुं प्राणेशोचितविविधवस्तूनि सुमुखि।

गृहीत्वा गुप्तानि स्मरसि परिधेयस्ववसनं,

गृहीतं मां स्वामिन्यहमिह कृतार्थैव हि तदा॥५॥

कुतूहलाभिवासितप्रियेण पाणिकर्षणा

दितस्ततोविपाटितां स्वकंचुकीमतिप्रियाम्।

प्रदातुमुन्नतांगि मां सकृ द्यदि स्मरस्यहं,
तदा मुदास्मि राधिके कृतार्थतापदं गता ॥६॥
चारुप्रसूनमयतल्पगता स्वनाथे
तांबूलचर्वितमुदारमुखांबुजस्थम्।
दातुं स्थिते निजमुखाब्जगतं प्रदातुं
मां चेत्स्मरस्यनुचरी क्व तदा नमामि ॥७॥
निकुंजे पुष्पालीरचितशयनात्केलिजनित
श्रमांभः संक्रांताननकमलशोभाहृतमनाः।
समुत्थायायांती सहजकृपया केलिदलित
स्रजं दातुं राधे स्मरसि यदि मां त्वं किमपरैः ॥८॥

यदा चलसि मार्गतः शयनभावशेषे मुदा
पदांबुजमलंकरोष्यमलकुंकमं त्वं तदा॥
मुहुः सुमुखि राधिके किमधिकं तु संप्रार्थये
सदा भवतु मे भवच्चरणपंकजारक्तता॥९॥

प्रियतमकरपद्मस्पर्शभावैक्षणोद्यद्दरस
भरजवरासामंदमोदाकुलानाम्॥

प्रतिपदतलरुग्भिर्गोपसीमंतिनीना-

मरुणातरहृदंभोजन्मने मे नमोऽस्तु॥१०॥

यावंति पदपद्मानि भवतीनां हरिप्रियाः॥

तावद्रूपः सदा दास्यं करवाणि तदा तदा॥११॥